देवबणी री बात

कृपाविस का सामुदायिक जंगल 'देवबणी/ओरण' संरक्षण अभियान

अंक 18 दिसम्बर 2010

बाघ या मानव : शायद दोनों ही जरूरी

'मरे शेर (बाघ) की मूँछ उखाडना' कहावत के रूप में खुब सुना है, लेकिन हकीकत में सरिस्का में देखने को मिल रहा है। असलियत में, जंगलों में वन्यप्राणियों के बीच रहने वाला समाज कभी भी जिन्दे बाघ की मूँछ नही उखाडेगा। मतलब यह कि वह जिन्दे वन्यप्राणी को कभी नुकसान नहीं पहुँचायेगा। जंगल में रहने वाला समाज वन्यप्राणियों के साथ सौहाद्र पूर्ण रहता आया है। इसके अनेकों प्रमाण व अध्ययन उपलब्ध हैं। यहां के लोगों की आजीविका जंगलो पर निर्भर है इसलिए जंगल व जंगली जीवों को बचाने का दायित्व यहाँ के मानव का है। इस समाज में घराडी़, दडा, देवबणी, अंशकालीक प्लायन, चक्रित चराई जैसी अनेकों परम्परागत विधियां है जिससे जंगल व जंगली जीवों को कम से कम नुकसान हो।

जंगल में रहने वाले मानव व बाघ का आपसी रिस्ता रहा है। यदि बाघ और आदमी आमने सामने आ जायें तो बाघ मानव को रास्ता दे देता है, ऐसी मान्यता है यहां रहने वाले लोगों की। लेकिन आज जंगल में साथ-साथ रहने वाले मानव व बाघ दोनों को ही एक दूसरे का दुश्मन बता कर प्रचारित किया जा रहा है। जब कि वास्ततिक रहस्य कुछ और है। जंगलो की अंधाधुधं कटाई और शिकार ने बाघों को भी विलुप्त की श्रेणी में ला खड़ा कर दिया है। इसी कारण आज सरिस्का अभ्यारण का नाम बहुत जोर शोर से उठ रहा है।

प्राचीन काल से ही यह मान्यता चली आ रही है कि बाघ द्वारा मवेशी को खा जाने पर यहां मवेशी पालक कभी विचलित नही होता, न ही मुवावजे की मांग करता। वह तो

KRAPAVIS

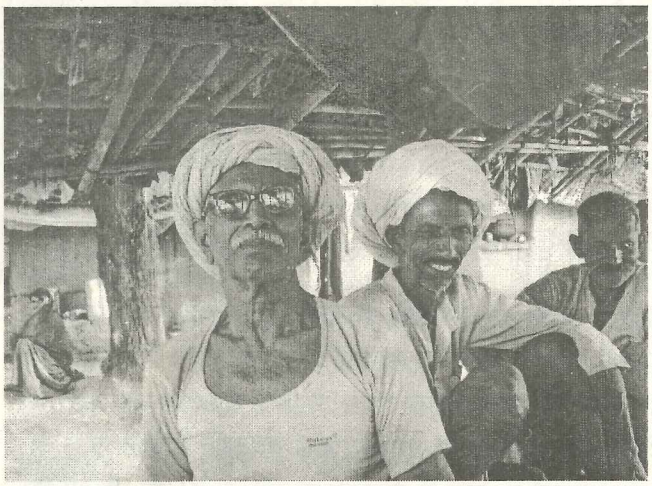

कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान (कृपाविस)

कृपाविस बणी, गांव-बख्तपुरा

पो० सिलीसेढ़, जिला अलवर-301001 (राज.)

ई-मेल:krapavis_oran@rediffmail.com

सम्पादन : अमनसिंह व प्रतिभा सिसोदिया

इस प्रकृति में खादय श्रृंखला का हिस्सा मानता है तथा बाघ की उपस्थिति भी महत्वपूर्ण मानता है। यदि जंगल में आग लग जाती है तो आग बुझाने सबसे पहले यहां के ग्रामवासी ही पहुँचते हैं। बाहरी शिकारियों से टक्कर भी सबसे पहले यहाँ के ग्रामवासी ही लेते है।

जिन वनों को आदिकाल से वनवासी संरक्षित रखते आये हैं। तथा उन पर आश्रित रहे हैं उन वनों में ईंधन, पशुओं के लिए पान-पत्ता, रहने हेतु छान-छप्पर तथा आवश्यक वस्तुऐं का मर्यादित उपयोग तक के लिए उनके अधिकार को आज की सरंक्षक नितियों ने छीन लिया है। इन लोगों को वनो से बाहर रखने के लिए वन संरक्षकों की फौज तैनात की गई। इन्हे जितना पीडित कर सकते थे-किया है, लेकिन ये समुदाय अपने वनों एवं वहां के प्राणियों की रक्षा के लिए रूके रहे हैं।

वर्तमान में अनुसूचित जनजाति और अन्य परंपरागत वन निवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम 2006 से वन वासियों को एक सम्बल मिला है। यहाँ के समुदायों की मान्यता है कि बाघ तो जंगल का राजा है बिना राजा के तो जंगल बेधणी हो गया। परिणामस्वरूप, हर कोई मानव व वन्य प्राणी बेधडक हो गये हैं। जंगल की बर्बादी व बाहरी शिकारियों के होंसले बुलन्द हो गये हैं। जंगल में प्राकृतिक संतुलन बिगड गया है। यहां का मानव व बाघ शायद दोनो साथ-साथ रहकर ही सन्तुलन कायम रख सकते हैं।

भर्तृहरि बाबा की देवबणी : कैरवाडी

भर्तृहरि बाबा की देवबणी कैरवाडी गाव में स्थित है। कैरवाडी गांव अलवर जिले की अलवर तहसील में अर्थात मालाखेडा उपतहसील में पडता है। इस गांव में लगभग 95 घर है। जिसमें राजपूत, गुर्जर, पंडित, जाटव, यादव जाति के लोग निवास करते है। इनका मुख्य व्यवसाय पशुपालन व कृषि है। इस गांव की जनसंख्या लगभग 921 है। इस गांव में पशुओं की संख्या निम्न प्रकार से है जैसे– भैंस 1000, गाय 150, बकरी 800, ऊँट 5 है। कैरवाडी गांव में 9 हैक्टेयर चारागाह जमीन है। इस गांव का कुल क्षेत्रफल 306 हैक्टेयर है जिसमें 66 हैक्टेयर सीचिंत क्षेत्र व 211 हैक्टेयर असीचिंत क्षेत्र है तथा 20 हैक्टेयर क्षेत्र में गाँव बसा हुआ है व खाली पडा क्षेत्र है।

भर्तृहरि बाबा की देवबणी के पास में सुकडी नदी बहती है जिसमें वर्षा के समय में पहाडो का पानी आता है। इस नदी में सरकंडा घास बहुत मात्रा में है। सरकंडे के बारे में विस्तार से आगे दिया गया है। इस देवबणी में जल स्रोत के अन्य साधनों के रूप में परम्परागत जोहड है। जो पशुओं के पानी पीने, नहाने व पौधो की नमी बनाये रखने के लिए उपयोग में आता है। इसमें जंगली पशु व पक्षियों को भी पानी मिलता है। गांव के लोग मानते हैं कि जोहड में बरसात का पानी भरे रहने से कुंए के पानी का जल स्तर बढता है।

इस देवबणी का वनस्पति आच्छादित क्षेत्र लगभग 80 हैक्टयर व 70 हैक्टयर अनाच्छादित हैं। इस देवबणी की परम्परागत स्थिति सघन थी। इस देवबणी की खातेदारी सार्वजनिक रूप से गांव के पास है। देवबणी में 10000 के लगभग पेड–पौधे है। यहां पर रोंज, नीम, कैर, पापडी, छिला, खैनी, पीपल, बड, खैरी, देशी बबूल, खेजडा, बिलपत्र, शीशम, कैर तथा अनेक प्रकार की जडी–बूटी आदि कई प्रकार के पेड–पौधे पाये जाते हैं। इस देवबणी में कई पौधे ऐसे है जो कि आज से 20–25 साल पहले पाये जाते थे जिनमें जरगा घास, बौना, रैडा आदि थे। वर्तमान में पिछले कुछ वर्षो से पवाड नामक वनस्पति इस देवबणी व आसपास के क्षेत्रों में आ गई है। पंवाड के बारे में एक पहेली भी है :–

मोती महर धरती में बैठा बात करे गुर ज्ञान की।
एक पेड ऐसा देखा जिसमें डाली छ: छ: पान की।।
तीन कोस गोविन्दगढ कहिए बीच में लकिया ताड का।
मोती महर से ये जा कहना वो है पेड पंवाड का।।।।

पारिस्थितिकी प्रभाव की दृष्टि से बरसात में कमी आई है। जिसकी वजह से देवबणी में चारे की कमी हो गई है। जब अकाल की स्थिति उत्पन्न हो गयी उस समय महात्मा जी ने डूंगरी के ऊपर तपस्या की तथा 13 दिन बाद बरसात हुई और तब से गांव वाले भर्तृहरि बाबा की देवबणी की रक्षा करते है व भर्तृहरि बाबा की मान्यता रखते है। गांव के लोगों ने पेड काटने के अलिखित नियम बनाये कि अगर कोई इस बणी से पेड काटेगा तो उसके ऊपर 1100 रूपये का दंड होगा। जोहड में बरसात का पानी जिस नाले से आता है उसमें गंदगी नहीं करेगें, अगर उसमें गंदगी करेगा तो उस पर 500 रूपये का दंड होगा।

कैरवाडी गांव के लोगों ने कृपाविस संस्थान के सामने एनिकट बनवाने के लिए व पेड पौधे लगवाने के लिए सहयोग मांगा तो कृपाविस ने नरेगा के तहत कराने की कार्य योजना तैयार की है। इस देवबणी के पास में 15 कुंए टयूबवैल सुखे व पुराने है। जोहड के पास जब से सडक बनी है तब से जोहड में पानी की आवक बंद हो गई है। क्योंकि पानी का रास्ता रूक गया है। जो पानी टयूब वैल से जोहड में डालते है वही पानी जोहड में रहता है। सर्दियों में जोहड नहीं भरती क्योकि टयूब वैल से खेती की ही पार नहीं पडती है कैरवाडी गांव की डूंगरी पर बरसने वाले पानी को जोहडी में लाने का पुन: प्रबन्ध कैरवाडी डूंगरी पर बरसने वाला पानी गांव के घरों में घुसता है और व्यर्थ इधर–उधर इकट्ठा होता है। गांव वालों ने बताया कि डूंगरी की तलहटी के सहारे खाली खोदकर पानी को सडक काटार या सीमेंट के नाले बनाकर लाया जा सकता है। जिससे आसपास के सूखे पेड़ कुओं के जलस्तर पर भी फायदा होगा और मवेशियों और खेती को भी लाभ मिलेगा।

सरकंडा : बहुत उपयोगी घास

सरकंडा (झुंडा) जिसका वैज्ञानिक नाम 'सेकरम स्पोनटेनियम' आमतौर पर स्वत पैदा हो जाने वाला एक ऐसा प्राकृतिक पौधा है जो एक बार लगा देने के पश्चात धीरे–धीरे अपनी जडें मजबूत कर लेता है और आसपास फैलता चला जाता है और कुछ दिनों में झुण्ड के रूप में अपनी शाखाएं निकाल लेता है। इसकी जडें भी ज्यादा गहराई तक नहीं जाती है, जिसकी वजह से इसे अधिक पानी की जरूरत नहीं पडती और कम पानी कम स्थान, बिना खाद और सुरक्षा/देखभाल के यह बहुत तेजी से गोलाई/ वर्ताकार रूप में फैलकर मिट्टी में पकड और स्थान बनाता जाता है और भूमि पर गहरा छा जाता है। इसके पत्ते लम्बे और ब्लेडनुमा होत है और पौधे से निकलने वाली पतली–पतली सी लम्बी शाखाओं (जिन्हें बाद में सरकंडा कहा जायेगा) की सुरक्षा करती हैं। बुवाई जीवन में मात्र एक बार ही करनी पडती है इसके पश्चात यह स्वयं बढता और फैलकर जमीन पर अपनी मजबूत स्थिति बना लेता हैं। और तो और कई बार ज्यादा फैल जाने या जगह घेर लेने पर या इसे और ज्यादा फैलना

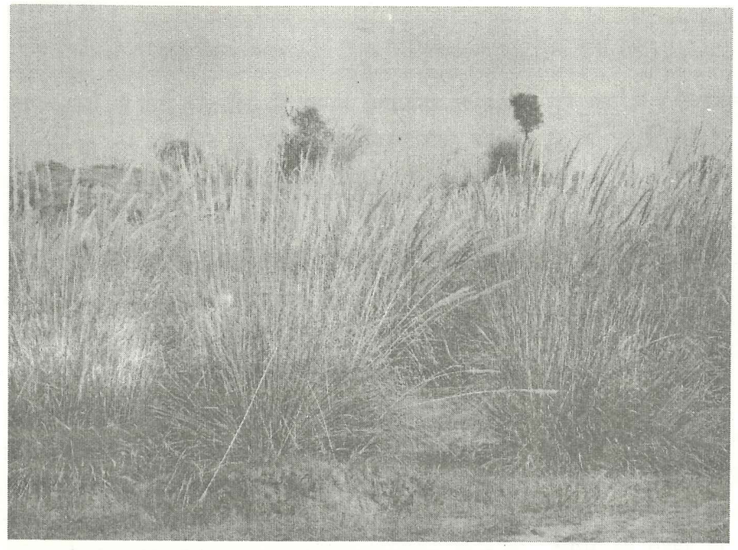

होता है अथवा बहुत वर्षो का पुराना खडा हो और वृद्धि रूक गयी/ कमजोर हो ऐसी स्थिति में तो इसमें आग लगा दी जाती है जिससे इसकी सूखी पत्तियां/शाखाएं अनावश्यक जला दी जाती है और कुछ ही समय पश्चात यह पौधा बहुत तेजी से पुन: प्रस्फुटित होकर हरा भरा हो जाता हैं।

सरकंडा खासतौर पर जल संरक्षण, भूमि सुरक्षा, मानव, पशु पक्षी जीव जंतुओं और आसपास जलवायु/वातावरण के लिए बहुत महत्व और लाभ है और जरूरत है। जिनमें से कुछ मुख्य तथ्य और जीवित प्रमाण निम्न प्रकार है–

पर्यावरण संरक्षण – ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों द्वारा मेडबंदी के दौरान इसको रोपित किया जाता है, जिससे मेड मजबूत हो जाती है तथा मेड पर लगाई गई मिट्टी का क्षरण/कटाव नहीं होता अर्थात भूमि संरक्षण के लिए बेहद लाभदायक है। यह प्रचलन सदियों में पुराना है और आज तक जारी है। ग्रामीण क्षेत्रों में खोदे जाने वाले जोहड/ तालाब/ चेकडेम, खेत की मेड इत्यादि पर जल संरक्षण हेतु सरकंडा लगाया जाता है ताकि जोहड, तालाब, चेकडेम में मिट्टी न जा सकें और जल संरक्षित रह सके। इसके ताजा प्रमाण ग्रामीण इलाकों में देखे जा सकते है। वर्षा के दौरान जो पानी बरसता है उसे अपनी जड़ों एवं पत्तियों द्वारा जमीन के अंदर तक सीधा पहुंचाता है। और जो पानी बहकर खेत, जोहड के बाहर निकलता है उस पानी को वहीं खेत/ जोहड में ठहराव देता है अत: जल भराव एवं संरक्षण के लिए बेहद लाभकारी है।

दुर्लभ जीव जंतु – सरकंडे की जड़ों में विभिन्न जीव जंतुओं का जीवनयापन होता है जिसमें मुख्यत: रेपटेलिया वर्ग जैसे सांप, गोहरा, गोह, दुमुही, सेह, नेवला जैसे दुर्लभ प्राणी अपना घर बनाकर सुरक्षित रह पाता है। इसके अलावा गिरगिट, बिच्छू, चूंहा, छछून्दर, जंगली जानवर जैसे बिलाव, लोमडी, गीदड बिल्ली, खरगोश, तीतर, बटेर इत्यादि भी सरकंडे की जड़ों में अपने आप को सुरक्षित महसूस करते है। सरकंडे की शाखाओं पर पक्षी भी जैसे बया, चिड़िया, गिरगिल इत्यादि भी घोसले बनाकर जीवनयापन करते है।

स्वरोजगार– सरकंडे का उपयोग मानव की रोजी– रोटी स्वरोजगार के लिए भी महत्वपूर्ण है। मेवात क्षेत्र/ ग्रामीण इलाकों के शिल्पकार, ग्रामीण कारीगर, व्यापारी, सरकंडे की बनी मुढिया, कुर्सियों, चारपाई, सिरकियां, टाटीयां, सजावटी एवं कलात्मक सामान जैसे चंगेरी, टोकरी, फ्रूट बॉक्स, छाज, झाडू इत्यादि बनाकर बाजार/ व्यापार मेलों, हाट स्थानों पर भारी कीमतों में बेचकर जीवनयापन कर रहें है। सरकंडे की बनी सिरकियां/टाटीयां खासतौर पर समुद्री तटीय, अत्यधिक तूफान/भूकम्प प्रभावित वाले इलाकों में जीवन सुरक्षा के लिए अत्यधिक काम में ली जाती है तथा मेवात की बनी सिरकियां/टाटीयां चैन्नई, मुंबई, गुजरात, पंजाब इत्यादि जगह मांग पर भेजी जा रही हैं।

पशुपालन – मेवात क्षेत्र के पशुपालक अपने पशुओं को तूडी के साथ–साथ हरे चारे के साथ–साथ चारे के रूप में उपलब्ध घास या सरकंडे के हरे पत्तो को मिलाकर चराते है और लाभकारी मानते है। गत कुछ वर्षो पूर्व अकाल के दौरान केवल चारे के रूप में सरकंडे ने ही पशुपालकों के दूध के रोजगार को जीवित रखा था। सबसे बडी खासियत यह की गर्मी, सर्दी, वर्षा इत्यादि कोई भी मौसम हो यह हरा भरा रहता है और बिना देखभाल के खुद को जीवित रखता है और पशुओं को भी।

आवास, मकान – मेवात ही नहीं बल्कि पूरे राजस्थान में जहॉ–जहॉ सरकंडा पैदा होता है वहां–वहॉ पर अधिकतम ग्रामीण आम गरीब लोगों का आवास ओर उसकी छत केवल सरकंडे की ही बनी होती है। हर गरीब का कच्चा आशियाना हो तो सरकंडा ही उसकी छत होता है, जिसमें वह संसार–परिवार जीवन गुजारता है या फिर अमीर की हवेली हो उसके ठीक सामने एक सरकंडे से बनी शानदार झोपडी, शेड उस हवेली की शोभा में चार चांद लगाती हैं। इसी के चलते पशुपालक अपने पशुओं के लिए सरकंडे का पशु घर बनाता है तो शोकिया जीव जंतु पालक /प्रेमी अपने पक्षी या पालतू जानवर के लिए सरकंडे का बना पिंजरा घर बनवाता है ताकि जीव–जंतु सुरक्षित रह सके और उसे सही वातावरण मिल सके। चलता फिरता परिवार घुमंतु परिवार भी इसी की बनी सिरकियां ही काम में लेते है। इसकी कुर्सी, चारपाई, फ्रूट बॉक्स के लिए लाभकारी होती है, यह उष्मा रोधी है। इसलिए इसकी बनी छतें गर्मी में अधिक गर्म और सर्दी में अधिक ठंडी नही होती है। अत: सरकंडे का महत्व पर्यावरण और आम जीवन मानव के लिए जरूरी है और सरकंडा भी प्राकृतिक पर्यावरण चक्र का अभिन्न हिस्सा है।

(द्वारा घनश्याम कुमार, भारतीय युवा चलचित्र संस्थान)

वृक्षो की विचित्र दुनिया

अचरज से भरी इस दुनिया में मनुष्य के विचित्र एंव हेरतअंगेज कारनामों का विवरण तो मिलता ही है किन्तु ''वृक्षों की अदभुत दुनिया'' का उल्लेख भी कम रोचक तथा आश्चर्यो से भरी नहीं है ये वृक्ष अपनी विचित्र प्राकृतिक स्थिति के कारण सदैव चर्चा का विषय रहे है, पर्यावरण की सुरक्षा की दृष्टि से अनोखे वृक्षों की प्रासंगितकता का यहां उल्लेख करना बहुत जरूरी है। इन उपयोगी वृक्षो के संसार की चर्चा करना प्रदूषण रहित वातावरण के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

दुध देने वाला वृक्ष :– दक्षिणी अमेरिका के घने जंगलों में उगने वाले इस काउ ट्री जिसकी उॅचाई 100 फीट होती है के तने में छेद करने से दूध के समान सफेद पदार्थ निकलने लगता है, जो गाय के दूध के स्थान पर प्रयुक्त होता है। यह दूध जिसे 'नायलेस मिल्क' कहते हैं बहुत ही मधुर स्वादिष्ट और पोष्टिक होता है।

मानव–भक्षी वृक्ष :– अफ्रीका महाद्वीप तथा मैडागास्कर द्विपों के जंगलो में कही कही मानव भक्षी भी मिलते है जो मनुष्य और पशुओं को मूलवंश अपने निकट जाने की स्थिति में अपनी जहरीली तथा कंटीली, शाखाओं को फेलाकर घेर लेते है तथा प्राणी के शरीर में प्रवेश करके उनका रक्त पी जाते है और परिणामस्वरूप उनके प्राण पखेरू उड जाते हैं इस लिए 'डेथ–ट्री' के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

मार्ग–दर्शक वृक्ष :– यह विचित्र मार्ग दर्शक वृक्ष पाथ गाईडिंग ट्री जिसे पैचीपाडियम नामकवेनम भी कहा जाता है और जिसकी आकृति कुतुबनुमा पौधो की भॉति होती है दक्षिणी अफ्रिका में पाया जाता है इस पेड की पत्तिया हमेंशा उत्तर की और झुकी रहती है। अन्धकार में भी पत्तियों को हाथ लगाकर दिशा का ज्ञान प्राप्त करने के लिए यह वृक्ष यात्रियों का मार्गदर्शन करते है।

अग्नि उगलने वाला वृक्ष :– जापान के घने वनों में पाया जाने वाला यह आग उगलने वाला वृक्ष जिसे 'फायर बर्लटिंग ट्री' के नाम से पुकारा जाता है। सूर्यास्त के समय अपनी चोटी से एक विचित्र प्रकार का जहरीला तथा प्रदूषित धूऑ छोडता है जिसके फलस्वरूप उसके चारो और आग उगलने लगती है जिससे जीव जन्तुओं को अपने प्रणों से हाथ धोना पड सकता है।

जलवर्षक वृक्ष :– यह जलवर्षक वृक्ष इन्डोनेशिया के सुमाग द्विप में पाया जाता है। गर्म क्षेंत्र में उगने वाला यह रेनफल ट्री जिसे समानीसमन के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है, दिन में अपनी कलियों में पानी इकट्ठा कर लेता है और शाम को घनी वर्षा के रूप में उसे छोड देती हैं। ऐसा लगता है कि जैसे हल्की–हल्की वर्षा हो रही है।

विषैला वृक्ष :– यह विषैला वृक्ष जिसे क्रोधी वृक्ष के नाम से भी पुकारा जाता है और अंग्रेजी में पायजनस ट्री के नाम से जाना जाता है, अपनी क्रोध रूपी सनसनाहट पैदा करता है और एक विचित्र प्रकार का पीला पाउडर सा झाडता है जो यदि किसी मनुष्य के उपर पड जाए तो वह दाद, खाज, खुजली आदि रोगो से ग्रस्त हो जाता है।

मुर्छित करने वाला वृक्ष :– यह वृक्ष जिसे अंग्रेजी में ल्लोरोफार्म ट्री के नाम से पुकारा जाता है, अर्जेन्टाईना के वनों में पाया जाता है। यह वृक्ष सर्वप्रथम थके पक्षि को अपनी मधुर लोरी सुनाकर अपनी थके–हारे राहगीरों के शरीर में अपनी नुकीली टहनीया घुसाकर उनका रक्त पी कर उन्हे मरणासन्न कर देता है।

सिगरेटों का वृक्ष :– यह आश्चर्य जनक किन्तु सत्य है कि अगर आप दक्षिण अमेरिका के जंगलो में है और आपको सिगरेट पीने की तलब लग रही है तो जनाब सिगरेट हाजिर है। वहां के जंगलो में सिगरेट ट्री नामक वृक्ष होते है। इस पेड के पत्ते सिगरेट के आकार में मुडे हुए होते हैं। सिगरेट सामान्य तम्बाकू भरे सिगरेटों से भी ज्यादा नशीले होते है।

हंसने वाला वृक्ष :– अफ्रीका के जंगलो में एक ऐसा वृक्ष पाया जाता है जिसके फलों पर यदि आटा डाला जाए तो वृक्ष से हसने की आवाज उत्पन्न होती है। दक्षिण अमेरिका में भी ऐसा ही एक वृक्ष पाया जाता है जिसे हिलाया जाए, तो जोर–जोर से हंसने की आवाज होती है। जब कभी आंधी आती है तो इस वृक्ष से खिलखिला कर हंसने की आवाज आती है। अंग्रेजी में इसे लाफिंग ट्री कहते है।

सुगन्ध–दुर्गन्ध वृक्ष :– यह सुगन्ध वृक्ष जिसे अंग्रेजी में फ्र गेरंस स्मैल ट्री कहा जाता है यह डेनमार्क में पाया जाता है। इस वृक्ष से रात के समय महक, मनोहारी तथा मधुर–सुगन्ध निकलती है। दिन में यह सुगन्ध दुर्गन्ध में बदल जाती है, जो वृक्षों के नीचे से गुजरने वाले राहगीरों के लिए मानसिक वेदना का कारण बन जाती है।

सर्प–फन–समान वृक्ष :– कैनरी–द्वीप समूह के ओराटावा प्रदेश में एक विचित्र और प्राचीन वृक्ष है जो 6000 वर्ष पुराना बताया जाता है। इसको ड्रमेगन ट्री कहा जाता है। इसके तने की उचाई लगभग 80 फुट है यह वृक्ष ऐसा प्रतित होता है जैसे कोई सांप अपना फन फेलाये हुए हो।

(संकलित द्वारा सुशील कुमार शर्मा)

पारंपरिक पशु चिकित्सा पद्धति: देवबणी/ओरणों से फलति

देशी उपचार में ऐसा माना जाता है कि अनेक रोग शरीर में गर्मी या ठंड के बढने से होते हैं। ठीक इसी तरह कुछ चीजों के बारे में माना जाता है कि उनमें शीतलता लाने वाले तत्व है। इनमें सभी फल विशेष रूप से नीबू प्रजाती के फल, प्याज, दूध, दही आदि आते है। कुछ चीजों के बारे में माना जाता है कि रोग का कारण गर्मी है तब शरीर की बढी हुई गर्मी को निष्कय करने के उदेश्य से इलाज किया जाता है।

विभिन्न लोगों और उपचार करने वालों के वर्षो के अनुभव इस पद्धति को विकसित करने में सहायक रहे हैं। इसलिए एक बीमारी जैसे पैर और मुंह की बीमारी के कारण और उपचार के जो तरीके राजस्थान क्षेत्र मे अपनाए जाते हैं उसी बीमारी के कारण और उपचार के तरीके छत्तीसगढ में उससे पूरी तरह अलग अपनाए जाते है। फिर भी देशी उपचार की पद्धति की सबसे बडी ताकत इसमें उपयोग में लाने वाली जड–बूटीयां, पशुओं के उत्पाद और खनिज है जो आवश्यकतानुसार सरल तरीके से उपलब्ध हैं और बडी संख्या में यहां तक की वे भी इलाज कर सकते है, जो पढना–लिखना नहीं जानते और जिन्हे कोई औपचारिक प्रशिक्षण नहीं मिला है। देशी उपचार पद्धति से लाभ व हानि निम्न प्रकार हो सकती है।

लाभ:–

- ❖ दवाईयाँ स्थानीय स्तर पर उपलब्ध होने से कम कीमती
- ❖ आसानी से हर व्यक्ति समझ लेता है।
- ❖ दवाईयों को आसानी से तैयार कर सकते है।
- ❖ इनके दुष्प्रभाव बहुत कम।

हानि:–

- ❖ संक्रामक बीमारियों मे अधिक प्रभावशाली नही
- ❖ दवाईयों का असर कभी–कभी बहुत धीमा
- ❖ इनके संग्रहण की पद्धति विकसित नहीं है

कृपाविस का पारंपरिक पशु चिकित्सा को लेकर अध्ययन, प्रशिक्षण, पशु उपचार इस विधि के तहत होता है। ज्यादातर जडी बूटियों ओरण देवबणियों में सहज उपलब्ध हो जाती है। कृपाविस ने पशु शरीर में कुछ होने वाली बिमारियों के नाम, लक्षण व उपचार निम्न प्रकार संकलित किये है।

पांचन संस्था से सम्बंधित बिमारी

❖ आफरा/पेट फुलना:–

लक्षण:– पेट फूलता है। पशु के बंद पडना व पशु जुगाली करना बन्द कर देता है।

उपचार –1 अण्डोली बीज 250ग्राम को पीसकर 2 लीटर दूध में गाढा होने तक उबालकर ठण्डा करके पशु

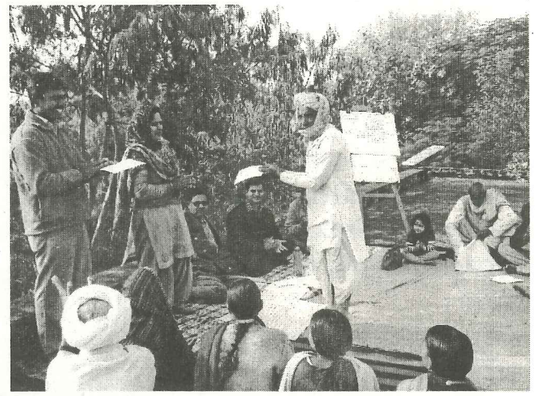

को पिलाना/खिलाना चाहिए। दिन में एक बार 2 दिन तक देनी चाहिए। (लालाराम मीना, मीणा की ढाणी)

उपचार –2 अण्डोली के पत्ते का रस 200 एम.एल. को एक लिटर पानी में डालकर 100ग्राम चीनी मिलाकर पशु को पिलाना चाहिए। दिन में एक बार 2 दिन तक देनी चाहिए।

उपचार –3 250ग्राम अण्डयानी के फल पिसकर उसमें थोडा सा नमक डालकर 500 एम.एल. छाछ के साथ मिलाकर पशु को देना चाहिए। दिन में 2 बार 3–4 दिन तक देना। (रामकरण गुर्जर, कुथेला)

❖ पेट दर्द:–

लक्षण:–जानवर उठक बैठक करता है। पेट पर लात मारता जुगाली करना बंद कर देना, पशु पीछे की ओर देखता है।

उपचार –1 50ग्राम सौठ और 50ग्राम अदरक पीसकर उसकी गोली बनाकर पशु को खिलानी चाहिए। दिन में 2 बार 2 दिन तक। (सोना देवी जाटव, पथरोडा)

उपचार –2 1किग्रा बड की जटा, 200ग्राम ताजा प्याज और 100ग्राम अजवाईन इन सब को बारीक पीसकर पशु को 60 ग्राम की गोली बनाकर देना चाहिए। दिन में 2 बार 2 दिन तक (फत्याराम गुर्जर, बेरा)

❖ कब्ज/पशु के बंद पडना:–

लक्षण:–पेट कडक हो जाता है। गोवर कडक आता है व जुगाली करना बन्द कर देता है।

उपचार:–कडीयाला की फली 500ग्राम को कूटकर 100ग्राम गुड में मिलाकर पशु को खिला देना चाहिए। दिन में दो बार चार दिन तक (खेमचन्द जाटव, सावडी का बास, अलवर)

❖ दस्तः–

लक्षणः– पतला बदबुदार गोबर आना, पशु कमजोर पड जाता है।

उपचारः–200 एम.एल. नीम के पत्तो का रस पिलाए।

दिन में 2 बार 2 दिन तक (बोदन गुर्जर बेरा)

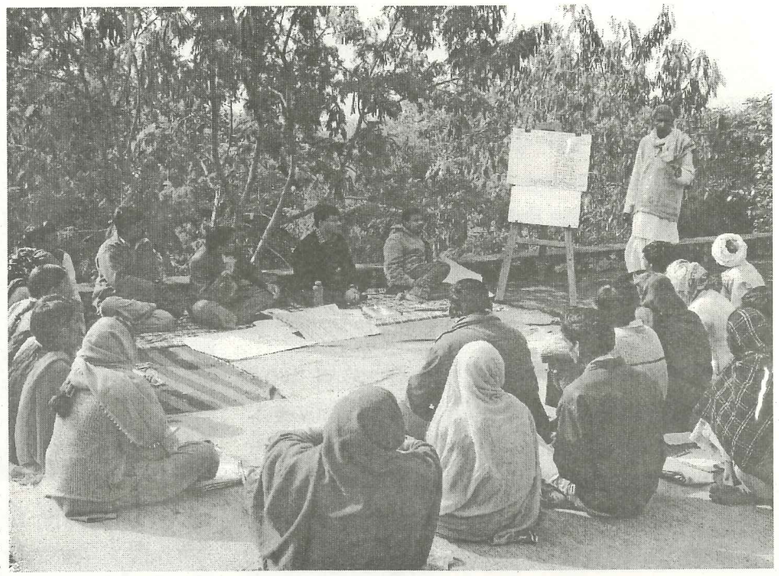

श्वसन तंत्र से सम्बन्धित बिमारी

❖ सर्दी और खासीः–

लक्षणः–नाक से पानी आना और खासना।

उपचारः–100ग्राम अडूस्टा/बासा का पाउडर100 ग्राम तुलसी पत्ते का पाउडर10ग्राम काली मिर्च इन सब को अच्छी तरह पीस कर पशु को 60ग्राम दिन में एक बार व तीन दिन तक खिलाये। (ए.पी.वैद्य)

❖ बुखार/जहर में आनाः–

लक्षणः–शरीर कपकपाता है व शरीर गरम हो जाता है नाक से पानी आना, कान गरम हो जाते है।

उपचारः–100ग्राम जाल, नीम व छीला की छाल 20ग्राम बांस की पत्ती को 2 लीटर पानी में उबालकर 1 लीटर रहने तक उबालते है फिर पशु को 500 एम.एल. उस पानी को दिन में एक बार तीन दिन तक पिलाना चाहिए। (दौलतराम गुर्जर केरवावाल)

प्रजनन तंत्र से सम्बंधित बिमारियां

❖ सडक्या/सुखनाः–

लक्षण–थनो पर सुजन आ जाती है। दुध का रंग पीलापन लिऐ आता है। कभी–2 दुग्ध बन्द हो जाता है। थनो पर त्वचा पर जाती है।

उपचार–1तुलसी, अवश्गंधा और शतावरी की 10ग्राम हर एक पाउडर मिलाकर पाउडर तैयार करते है। 30ग्राम पाउडर तेल में मिलाकर दिन में दो बार 5 दिन तक सुजन पर लगाये। (महाराष्ट्र वैद्य)

उपचार–2 नीम का तेल सुजन पर लगाये। दिन में 2 बार 3 दिन तक (ए.पी. वैद्य)

❖ दुध सुखनाः–

लक्षण–दुध की मात्रा का कम होना, दुध कम आना।

उपचारः–सुआ 25ग्राम, अजवाइन, कालीजीरा, सौफ, मैथी, सौठ हर एक 25 ग्राम लेकर उसमे 10ग्राम खसखस अच्छी तरह मिलाकर पशु को 60 ग्राम प्रतिदिन खिलाना चाहिए दिन में एक बार 3 दिन तक (महाराष्ट्र वैद्य)

त्वचा की बिमारियां

❖ चर्म रोग/खुजलीः–

लक्षणः– खुजली होना, शरीर को रगडना त्वचा पर छाले पडना, त्वचा का लाल होना।

उपचारः–200ग्राम चित्तावल के कन्द का पाउडर 25 ग्राम गंधक, 25ग्राम कॉपर सल्फेट, 25 ग्राम काली जीरा, 25 ग्राम हल्दी अच्छी तरह मिलाकर यह औषधी तिल्ली के तेल मे मिलाकर त्वचा पर लगाए। त्वचा पर दिन में एक बार 3 दिन तक लगायें। (खुशीराम गुर्जर, गुर्जर बास)

❖ बांगः–

लक्षणः– खुरो में घाव होना, लंगडाना।

उपचार–1 1 किग्रा झाडी देशी 1.5 लीटर पानी में उबाल कर आधा हाने तक उबालकर उस पानी से धोना चाहिए। दिन में 3–4 दिन तक (लालुराम जाटव, कालीखोल)

उपचार–2 1 किग्रा देशी आकडा का पूरा पौधा 1.5 लीटर पानी आंधा पानी होने तक उबालकर उस पानी से धोना चाहिए। दिन में तीन बार 4 दिन तक।
(लालुराम जाटव, कालीखोल)

उपचार–3 नीम का तेल दिन मे दो बार खराब त्वचा पर लगाये (अंतरा)

❖ घाव/चोटः–

लक्षणः– मवाद आना, कीडे पडना और खुन आना

उपचारः–सिग्रंटू मलहम लगाऐ दिन में 2 बार 3–4 दिन तक (महाराष्ट्र वैद्य)

(संकलनकर्ता तारासिंह कासनवाल, L.S.A.कृपाविस)

सोहन सिंह का प्रयास : सतत कृषि विकास

श्री सोहन सिंह ग्राम केरवावाल के एक किसान हैं जो अपने परिवार के साथ कृषि में विविध प्रकार की तकनीकी अपनाकर परिवार की आजीविका को सतत एंव सुदृढ बना रहे है। यह पहल लगभग 20 वर्ष पूर्व हुई, जब वे थल सेना से सेवानिवृत होंकर गांव वापिस आये। ग्राम केरवावाल, ग्राम पंचायत केरवावाल पंचायत समिति उमरैण, जिला अलवर का एक राजस्व ग्राम है। यह गांव मेगा हाईवे/मालाखेडा उपतहसील से 10 कि.मी. दूरी पर है। गांव से लगभग 42 परिवार है जिनमें 26 परिवार राजपुत, 2 परिवार पंडितो के और बाकी 24 परिवार अन्य पिछडी जाति के जैसे रेगर, प्रजापत, योगी, नाई आदि है यहां पूरा क्षेत्र अरावली पहाडियों से घिरा है तथा तलहटी में हरियाली से हरा भरा है। इस गांव में कई देवबणीयां है जिनमें मुख्यतः तुलसी नाथ की देवबणी तथा उपला वाला जोहड की देवबणी हैं।

श्री सोहनसिंह जी हर वर्ष बारीस के मौसम में ''कृषि एंव पारिस्थितिकी विकास संस्थान'' से पेड पौधे लेकर के अपने खेतों पर लगाते हैं। वे स्वयं तो पेड पौधे लगाते हैं साथ ही साथ अपने पोतो को भी बताते हैं और समझाते है कि इन की रक्षा करना हमारे लिए क्यों आवश्यक है। इतना ही नहीं वे ग्रामवासियों के साथ पंचायत भी करते है। पंचायत में पर्यावरण को कैसे शुद्व रख सकते हैं इसके बारे में चर्चा करते है। इसके लिए जल बचाव के बारे में लोगों को बताते है कि जल को बचाना क्यों आवश्यक है– अगर पृथ्वी पर जल समाप्त हो गया तो जीव प्राणी भी समाप्त हो जाएगें अगर कम पड गया तो आने वाली पीढी को संकट जैसी स्थिति उत्पन्न हो जाएगी।

गांव के आस पास वालों का भी मानना है कि जल संग्रहण करने से कुंआ का जलस्तर बढा है। श्री सोहन सिंह जी ने ग्रामवासीयों के साथ कृपाविस के सहयोग से उन्नत नस्ल का सांड/भैसा खरीदकर गांव में छोडा, जिसके छोडने से गांव के पशुओं को बाहर नही ले जाना पडता इससे समय की बचत भी हुई है इससे न केवल किसी एक को बल्कि सभी ग्राम वासीयों को लाभ हुआ है। पशुपालक जो कि सस्ती दर पर अपने पशुओं को क्रास कराते हैं। 10–15 पशु प्रतिमाह क्रास हाते है जिससे हमारे गांव के आस पास के पशु उन्नत नस्ल के पैदा हो रहे है।

श्री सोहन सिंह जी ने अपने खेत पर फसल, सब्जी उत्पादन के साथ ही साथ उन्नत नस्ल के पशु पालन पर विशेष ध्यान दिया है। इसी क्रम में आपने अच्छी नस्ल की गाय एंव मुर्रा नस्ल की भैंस का पालन उन्नत तरीके से कर रहे है। प्रतिदिन 10–12 लिटर के दूध का उत्पादन करते है। दूध से घी, मक्खन, छाछ आदि खाने के लिए उपयोग मे लेते है– गाय, भैस का गोबर कम्पोस्ट खाद्य बनाने के काम में लेते है। श्री सोहन सिंह ने बताया कि मेरे अनुभवों का लाभ गांव के आस पास के किसान आसानी से उठा पा रहे है। इन्होने चार खेलीयों का निमार्ण कृपाविस के सहयोग से करवाया जिसमें गांव के सभी पशु पानी पीते है। गांव के जोहड व देवबणी पुनरोत्थान कार्यो मे भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

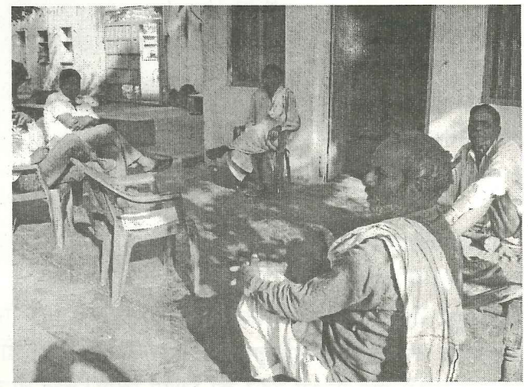

परम्परागत फसलें जैसे बाजरा, चना जौ, ज्वार, सरसों, चौला मुग, अरहर, मसुर, तिल्ली, प्याज, मक्का, मौठ, गेहूं, आदि को श्री सोहन सिंह जी आधुनिक युग में भी बोते है। खान पान में छाछ राबडी, बेजड की रोटी, गोचनी रोटी, प्याज रोटी, चना, मुग, उडद, बेसन की कढी, मंगोडी, चना, काबुली चना, सर्दीयों में बाजरे की रोटी, बाजरा राबडी, खीचडी, अन्नकुट बाजरा कढी से सभी परम्परागत खान पान है। लेकिन आज भी खाने में लेते है। तथा लोगों को इसके बारे में बताते है कि परम्परागत समय का भोजन हमारे लिए कितना लाभदायक है।

श्री सोहन सिंह जी गांव के बुजुर्ग व्यक्तियों में से है वे बच्चों से लेकर बडों तक को अच्छी बातों का ज्ञान कराते है वे परम्परागत बातों पर अधिक ध्यान रखते है न कि आधुनिक बातों पर जब बस ही न चले तो आधुनिकरण को अपनाते है। वे भजन भी करते है और समय के अनुसार अपने ज्ञान को बढाते रहते है और जो ज्ञान या नई बातें उनके पास आती है वे उनको दूसरों के जीवन में भी उतारते है अगर उनकी बातों पर अमल करें तो उनसे बहुत ज्ञान मिलता है। वे फुर्तीले आदमी है उनका स्वभाव बडा ही अच्छा है।

(द्वारा घनश्याम)

सरिस्का जंगल से विस्थापन: उमरी गाँव के अनसुलझे पहलू

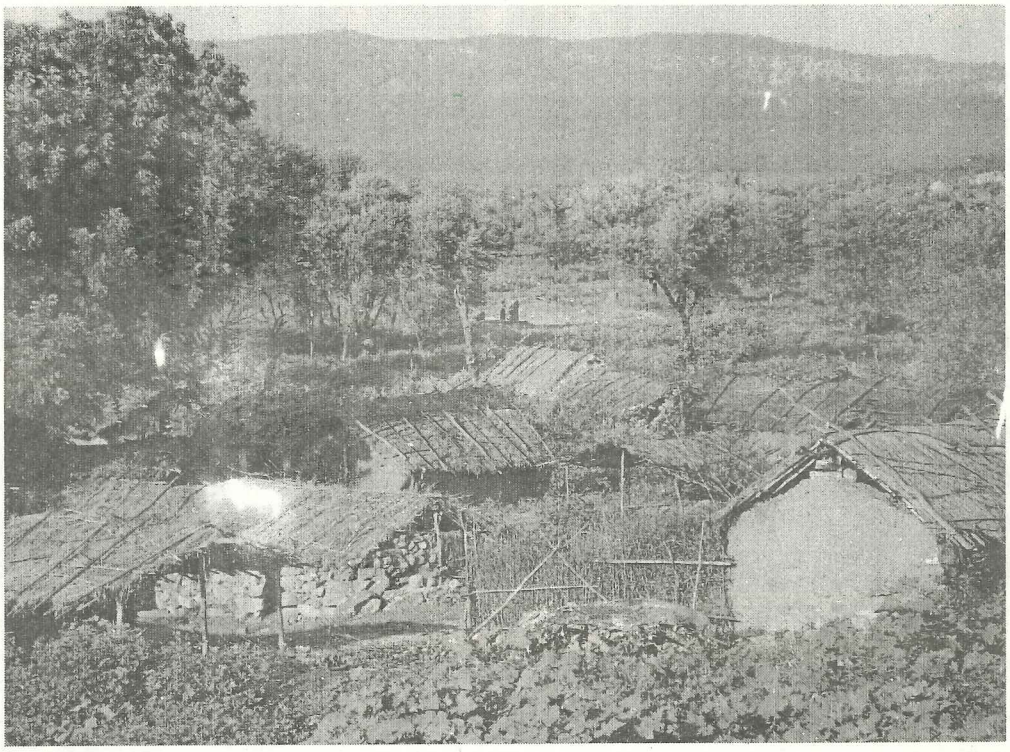

उमरी गांव सरिस्का क्षेत्र के कोर नं. 1 में पडता है। जिसमें लगभग 80 परिवार निवास करते हैं। जिनमें से 41 परिवारों ने विस्थापन के लिए जाने की हामी भर दी थी– 23 परिवारों ने विकल्प 2 तथा 18 परिवारों ने विकल्प 1 के तहत मुवावजे की माँग की थी। 4 दिसम्बर 2010 को उमरी ग्रामवासियों ने बैठक आयोजित की तथा सम्बन्धी विभिन्न पहलुओं पर निम्न चर्चा व निर्णय लिये गये :–

1. जिन परिवारों को मौजपुर रूंध में बसाने की सहमति हुई थी उनको आज तक भूमि आवंटन पत्र नही मिला है। जबकि उपवन संरक्षक बांघ परियोजना सरिस्का आवंटन पत्र देने के लिए अधिकृत है। अत: जब तक हमे दी जाने वाली भूमि का आवंटन पत्र प्राप्त नहीं होता तब तक हमने यहीं उमरी गांव में बसे रहने का निर्णय लिया। तथा दी जाने वाली खेती की भूमि पर बोरवेल तथा विद्युत कनेक्शन भी दिये जाने चाहिए।

2. हम ग्रामवासी सदा से मवेशी पालक रहे है तथा आगे भी हम अपना यह परम्परागत धन्धा सुचारू रखना चाहते है। अत: हमें नई जगह (रूंध मौजपुर) पर मवेशी चराने की सुविधा व अधिकार भी मिलने चाहिए।

3. आपके पत्रांक 468 दिनांक 08/09/2008 को हमें दिये गये पत्र के विकल्प 2 में दी जाने वाली मुआवजे राशी का योग 7 लाख ही आता है। जबकि विकल्प नंबर 1 में 10 लाख रूपये दिये जा रहे है सरकारी दिशा निर्देशो के तहत केन्द्र सरकार की तरफ से विकल्प 2 में 10 लाख रूपये के योग के बराबर मुआवजा देने का प्रावधान है। अत: इस पर भी हम स्पष्टीकरण चाहते हैं।

4. वन अधिकारों व जंगल संरक्षक कानूनों का भी हमने आपकी मिटिंग में चर्चा की तथा पाया की ये कानून भी हमें तब तक यहीं बने रहने का अधिकार देते हैं जब तक कि हमें नई जगह पर सभी सुविधाऐं, अधिकार तथा जमीन अधिकार सम्बन्धी उपयुक्त कागजात नहीं मिल जाते हैं।

5. पिछले कुछ दिनों से हमें आवश्यक समान लाने व दूध, मावा, आदि बाहर ले जाने पर हमारे रास्ते रोक दिये गये है। हमें नाजायज परेशान किया जा रहा है। जबकि उपखण्ड अधिकारी राजगढ के पत्रांक 4451–54 दिनांक 21/06/2006 के अनुसार भी आपको (सरिस्का अधिकारी) पाबंद किया गया था कि जब तक हमारा बाहर विस्थापन नही होता तब तक रास्ते का उपयोग करने का अधिकार रहें।

कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान (कृपाविस), बख्तपुरा, अलवर (राज०) द्वारा जनहित में प्रसारित।
मुद्रक: जय बाबा प्रिन्टर्स, स्टेशन रोड़, अलवर